

इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक ६ मार्च, २०१६ को होनेवाली मुख्य परीक्षा में पूछे जाएँगे । अभ्यास क्रम में सामिल पुस्तक की अंतिम संस्करण का ही उपयोग करें ।

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था
सत्संग शिक्षण परीक्षा

पूर्व कसौटी : सत्संग प्रवीण : प्रश्नपत्र - १

जनवरी, २०१६

समय : सुबह ९.०० से १२.००

कुल गुणांक : १००



अनुपस्थित परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका का केवल यही पृष्ठ वापस भेजना है ।

परीक्षार्थी के नाम सम्बंधित विवरण के साथ 'बारकोड' अंकित किया गया है । कृपया उस पर किसी प्रकार का नुकसान मत कीजिए ।

अनिवार्य : निम्न लिखित सूचना की परीक्षार्थी को अपने आप पूर्ति करनी है

बिना वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर की उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।

परीक्षार्थी का जन्म दिन दिनांक महिना वर्ष

परीक्षार्थी का अभ्यास

परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका पर अंकित नाम सहित अनिवार्य विवरण की सत्यता की जाँच करने के पश्चात् वर्ग निरीक्षक हस्ताक्षर करें ।

वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर

पीछे दी गई सूचनाओं का अवश्य पालन करें ।

परीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षक की नोंध :-

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	१ (६)	
	२ (५)	
	३ (४)	
	४ (४)	
	५ (८)	
	६ (८)	
	७ (७)	
	८ (५)	

विभाग-१, कुल गुण (४७)

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	९ (९)	
	१० (८)	
	११ (८)	
	१२ (५)	
	१३ (८)	

विभाग-२, कुल गुण (३८)

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	१४ (१५)	

विभाग-३, कुल गुण

मोडरेशन विभाग भाटे ४

गुण आंकडामां

शब्दोमां

चेकरनुं नाम

परीक्षार्थीओं को महत्वपूर्ण सूचनाएँ

१. परीक्षार्थी सत्संग प्रारंभ से प्राज्ञ - ३ तक की क्रमशः हर परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही अगली परीक्षा दे सकते हैं ।
२. सत्संग शिक्षण परीक्षा के मुख्य दिन परीक्षार्थी के नामलिखित मुख्य पृष्ठ परीक्षा कार्यालय द्वारा प्रिन्ट करके भेजा जाता है । उसके अनुसार ही परीक्षार्थी को परीक्षा की श्रेणी (प्रारंभ, प्रवेश, परिचय आदि...) एवं माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English) में परीक्षा देनी होगी । इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन करके दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।
३. परीक्षार्थी को पूर्वकसौटी के प्रश्नपत्र की श्रेणी (प्रारंभ, परिचय, प्राज्ञ-१, केवल प्रथम.....) एवं परीक्षा के माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English) अनुसार ही मुख्य परीक्षा देनी होगी । पूर्वकसौटी की जानकारी के अनुसार परीक्षा केन्द्र के मुख्य परीक्षा कार्यकर्ता को अंतिमसूची (Final List) भेजी जाती है, उसके अनुसार ही मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा देनी होगी । अंतिमसूची से अलग दिये गए विवरणवाली परीक्षा रद्द मानी जाएगी और ऐसी उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।
४. मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा खंड में उपस्थित हर एक परीक्षार्थी अपनी नामलिखित उत्तर पुस्तिका लेकर तथा उसमें मांगा गया अन्य विवरण (जन्म दिनांक, शिक्षा) लिखकर वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर अवश्य करवा लें । वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर बिना लिखी गई उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।
५. परीक्षार्थी केवल ब्लू या काली स्याही वाली पेन से ही उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखें । पेन्सिल अथवा लाल, हरी या अन्य स्याही से लिखे गए उत्तर या एक से ज्यादा स्याही से लिखी गई उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।
६. सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा न जा सके, ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे । एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावटवाली उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।
७. परीक्षा खंड के बाहर अथवा अन्य सभी परीक्षार्थीओं से अलग या परीक्षा के नियमों का उल्लंघन कर के दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।
८. सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व अनुमति के बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'स्थानापन्न' या 'सबस्टीट्यूट राइटर' अथवा 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका रद्द मानी जाएगी ।
९. सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद को पूर्व अवगत किए बिना, रजिस्टर्ड परीक्षा केन्द्र के बदले में अन्य परीक्षा केन्द्र से दी गई परीक्षा रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।
१०. सत्संग प्रवेश, परिचय, प्रवीण एवं सत्संग प्राज्ञ (प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्रों में रजिस्टर्ड हुए) के लिए परीक्षार्थियों को दोनों प्रश्नपत्रों की परीक्षा देनी अनिवार्य है । किसी भी एक ही प्रश्नपत्र की दी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।
११. मुख्य परीक्षा के दिन उत्तर पुस्तिका के अलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखे हुए उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।
१२. परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।
१३. प्राज्ञ की परीक्षा का फॉर्म भरने से पहले निम्नलिखित मुद्दे ध्यान में रखें ।
 - परीक्षार्थी एक ही साल में दोनो प्रश्नपत्र दे सकता है । अथवा पहले साल में पहला प्रश्नपत्र और दूसरे साल में दूसरा प्रश्नपत्र दे सकता है । पहले प्रश्नपत्र में उत्तीर्ण (पास) होने के बाद ही दूसरा प्रश्नपत्र दिया जा सकता है । प्राज्ञ परीक्षा में केवल प्रथम प्रश्नपत्र या दूसरा प्रश्नपत्र देनेवाले को उत्तीर्ण होने के लिए उस प्रश्नपत्र में ४५ अंक प्राप्त करना आवश्यक है ।
 - जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनो प्रश्नपत्र में रजिस्ट्रेशन कराया हो और यदि वह परीक्षार्थी किसी एक प्रश्नपत्र में ही उपस्थित रहता है और दूसरे प्रश्नपत्र में अनुपस्थित रहता है, तो एक प्रश्नपत्र की दी गई उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा । जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र दिए हों, उसे उत्तीर्ण होने के लिए ९० अंक प्राप्त करने होंगे ।
 - प्राज्ञ परीक्षा देने वाले सभी परीक्षार्थी कृपया ध्यान रखें कि जो परीक्षार्थी अलग-अलग साल में प्रश्नपत्र प्रथम और प्रश्नपत्र दूसरा देते हैं, उनको प्रथम प्रश्नपत्र ४५ या उससे ज्यादा अंक से उत्तीर्ण करने के बाद दूसरा प्रश्नपत्र ज्यादा से ज्यादा एक ही साल के विराम के बाद देना होगा । एक से ज्यादा साल की अनुपस्थिति के बाद दिया हुआ दूसरा प्रश्नपत्र स्वीकृत नहीं होगा । ऐसे परीक्षार्थी को पुनः प्राज्ञ का प्रथम प्रश्नपत्र अथवा दोनों प्रश्नपत्र देने होंगे ।
 - प्राज्ञ परीक्षा के पारितोषिक विजेता की सूची में आनेवाले परीक्षार्थी में से जिन्होंने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र एक साथ एक ही साल में दिया हो, उनको १० प्रतिशत (फिसदी) अंक पुरस्कार के रूप में दिए जाएंगे और इस तरह परीक्षार्थी पुरस्कार के योग्य माना जाएगा ।
 - नोंध : जिस परीक्षार्थी ने भारत की प्रवीण परीक्षा उत्तीर्ण की हो, ऐसे ही परीक्षार्थी प्राज्ञ-१ परीक्षा दे सकते हैं ।
१४. अवैद्य रजिस्ट्रेशन !!! परिणाम नहीं मिलेगा !!!

प्र. १ निम्नलिखित किन्हीं दो विषय के संदर्भ में शास्त्र के तीन प्रमाण दीजिए ।

(संदर्भ शास्त्र का नाम और क्रमांक लिखना अनिवार्य है ।)

[६]

१. भगवान अक्षरधाम में और पृथ्वी के उपर साकार हैं ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

२. भगवान को सर्वकर्ता-हर्ता जानने की आवश्यकता ।

३. श्रीजीमहाराज सर्वोपरि : अन्य परमहंसों के अनुसार

प्र. २ प्रमाण, सिद्धांत अथवा पंक्ति पर से विषय का शीर्षक दीजिए ।

[५]

उदाहरण : “भगवान को निराकार समझने के रूप में किया गया पाप तो पंचमहापापों की अपेक्षा भी बहुत बड़ा पाप है ।

इस पाप का कोई भी प्रायश्चित्त नहीं है ।”

उत्तर : भगवान को निराकार समझने से हानि ।

१. “त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ।”

.....

२. “प्रकट ने भजी भजी पार पाम्यां घणां, गीध गणिका कपिवृंद कोटि ।”

३. “धामरूप अक्षर तो एक ही है और दूसरे अक्षर मुक्त अनंतकोटि हैं ।”

४. “श्रीजीमहाराज को पुरुषोत्तम जाने बिना अक्षरधाम में नहीं जा सकते ।”

५. “भगवान में मनुष्यभाव रह जाए तो कल्याण नहीं होता ।”

प्र. ३ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । [४]

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहि दिया जाएगा ।

१. अनन्य निष्ठा सहित सभी अवतारों का आदर ।

(१) ☐ भगवद्भक्त अपने इष्टदेव को मुख्य रखते हुए अन्य अवतारों के प्रति भी श्रद्धा रखता है ।

(२) ☐ तस्यैव सर्वथा भक्तिः कर्तव्या मनुजैर्भुवि ।

(३) ☐ संत हरिजन एक है, भिन्न न मानो कोई ।

(४) ☐ अडसठ तीरथ मारा संतने चरणे, कोटि गंगा कोटि काशी रे ।

२. श्रीजीमहाराज के मुख से गुणातीतानंद स्वामी की अपूर्व महिमा ।

(१) ☐ हमारे पीछे जितने लोग फिरते हैं उतने मनुष्य इनके पीछे फिरें ।

(२) ☐ इसके समान कोई भगवान नहीं और मेरे समान कोई साधु नहीं ।

(३) ☐ इनकी महानता आसन से नहीं है ।

(४) ☐ आत्यंतिक ज्ञान तो इस साधु की महिमापूर्ण पहचान हुई वही है ।

[illegible]

[4]

- [illegible]

[୭]

१. पुरुषोत्तम नारायण
.....
.....
..... अद्वितीय है ।

५. आज्ञा का पालन किए बिना मोक्ष मिल सकता है, ऐसा नहीं समझना चाहिए ।
६. अक्षरब्रह्म मूर्तिमान तेज हैं, ऐसा नहीं समझना चाहिए ।
७. प्रकट ब्रह्मस्वरूप संत बन सकते हैं, ऐसा नहीं समझना चाहिए ।

[illegible]

[୧]

३. “जाओ, कुछ नहीं होगा । सब कुछ मिट जाएगा ।”

२. निष्कुलानंद स्वामी स्त्रियों की सभा में उपदेश देने नहीं गए ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

३. युवक विद्यार्थी सोचने लगा 'मेरे माता-पिता ने भी ऐसा प्रेम कभी नहीं दिया है' ।

४. सत्पुरुष के लिए भाषा के कोई बंधन नहीं होते ।

प्र. ११ निम्नलिखित विषय पर प्रमाणसर विवरण लिखिए । (बारह पंक्ति में)

१. शिवलालभाई का अलौकिक ध्यान । अथवा २. पर्वतभाई की संतों के साथ आत्मबुद्धि ।

.....

.....

३. निष्कंचन प्रमुखस्वामी महाराज । अथवा ४. त्वमेव माता च पिता त्वमेव ।

[୫]

१. प्रथम मिलन में वर्णीराज ने लालजी भक्त को क्या आशीर्वाद दिया ?

२. अगत्राई में काठियों ने क्या निश्चय कर लिया ?

३. सुरत में केशवजीवनदासजी को समाधि में से किसने जाग्रत किया ?

४. वैश्विक शांति किस प्रकार संभव है ?

५. स्वामीश्री के रोम रोम में क्या है ?

प्र. १३ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें। [८]

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहि दिया जाएगा ।

१. निष्कलानंद स्वामी की साहित्य रचना ।

(૧) ભક્તિનિધિ

(२) निर्णयपंचक

(३) स्नेहगीता

(४) भगवद्गीता

२. श्रीजीमहाराज ने वांसदा में कृपाप्रसाद दिया ।

(१) जरियान वस्त्र

(२) पाघ

(३) चरणारविंद की छाप

(४) धोती

३. प्रमुखस्वामी की निःस्वादीता ।

(१) इन्हें भोजन कराकर बिदा करना ।

(२) सेवक संत ने लाया हुआ जल पी गए ।

(३) सायट्रिक एसिड के कुल्ला ।

(४) दुर्गन्ध आती कढ़ी खाई ।

४. स्वामीश्री की क्षमाभावना ।

(१) वलसाड

(२) त्रिचिनापल्ली

(३) लंदन

(४) लोसएन्जलस

विभाग - ३ : निबंध

प्र. १४ निम्नलिखित किसी एक विषय पर करीब ६० पंक्ति में निबंध लिखिए ।

[१५]

१. परात्पर श्रद्धा के पुष्प । (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) अगस्त-२०१५, पा.नं. ४-६, ५६-५८)

२. शास्त्रीजी महाराज के ऐश्वर्य से होती कृपा समाधि और मेरी अनुभूति : मोरीस फ्रिडमेन
(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) मई-२०१५, पा.नं. १७-१८)

३. नस नस में बसा स्वच्छता मंत्र जहाँ : प्रमुखस्वामी महाराज
(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) जून-२०१५, पा.नं. १४-१७)

()

.....

.....

✍ आगे के पृष्ठों में उपरोक्त तीन निबंध (गुजराती भाषाओं) का विवरण दिया गया है ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....



✍ अगत्य की सूचना : सभी परीक्षार्थी अपनी संस्था की निम्नलिखित website - link पर से पुराने सालों के प्रश्नपत्र और उसके उकेलपत्र निःशुल्क डाउनलोड कर सकते हैं और उसकी प्रिन्ट भी निकाल सकते हैं ।

<http://www.baps.org/Satsang-Exams.aspx>

પરીક્ષાર્થી શ્રી,
સસ્નેહ જય શ્રી સ્વામિનારાયણ

**સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષા માર્ચ ૨૦૧૬ના નિબંધોની પૂર્વ તૈયારી માટે
નીચે જણાવેલ માર્ગદર્શન અને સૂચનો ધ્યાનમાં લેવા વિનંતી.**

૧. નિબંધ એટલે કોઈ નિશ્ચિત વિષય ઉપર વ્યવસ્થિત, ચિંતનપૂર્વક અને મુદ્દાસરનું લખાણ. સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષામાં પૂછાતા નિબંધો સામાન્ય જ્ઞાનના આધારે, પરીક્ષાર્થીના દૈનિક જીવનમાં સત્સંગના સદ્વાચન અને કથા શ્રવણ અને મનન દ્વારા પ્રાપ્ત થયેલ જ્ઞાનની કસોટી કરતા ૩૫ થી ૪૦ લીટીમાં લખવાના હોય છે.
૨. પરીક્ષાર્થીઓની માગણીને માન આપીને આ વર્ષે પ્રી-ટેસ્ટમાં પૂછાનાર નિબંધોના વિષયો અગાઉથી પરીક્ષાર્થીના એકાઉન્ટમાં અપલોડ કરવામાં આવ્યા છે.
૩. પ્રી-ટેસ્ટમાં જે તે પરીક્ષામાં પૂછાનાર નિબંધોના ત્રણે ત્રણ વિષયો આપવામાં આવ્યા છે. માર્ચ ૨૦૧૬ની ફાઈનલ પરીક્ષામાં આ ત્રણ વિષયોમાંથી કોઈપણ એક નિબંધ ચોક્કસપણે પૂછાશે જ. માટે જો આપ આ ત્રણે ત્રણ વિષયો તૈયાર કરશો તો આપ ચોક્કસપણે એક નિબંધ મુખ્ય પરીક્ષામાં ખૂબ જ સારી રીતે લખી શકશો.
૪. આ નિબંધોનું સામાન્ય બંધારણ, લખાણ(મેટર) જૂના ‘સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ’માંથી લેવામાં આવે છે.
૫. અહીં આપેલા નિબંધોનું લખાણ કેવળ દિશા સૂચક છે. આ જ લખાણ ગોખીને પરીક્ષામાં લખવાની જરૂર નથી. આથી વિશેષ સારા મુદ્દાઓનું ચિંતન-મનન કરી આપની રીતે પૂર્વ તૈયારી કરીને લખી શકો છો.
૬. ગુજરાતી માધ્યમ (ભાષા) સિવાયના પરીક્ષાર્થીઓ માટે : આ નિબંધોનું મૂળ પ્રકાશન ગુજરાતી ભાષામાં જ હોવાથી તેનું શબ્દશઃ ભાષાંતર ન કરતાં, તેનો ભાવાર્થ સમજીને પરીક્ષાર્થીએ પોતાની રીતે સમજીને તૈયારી કરવાની રહેશે. પરીક્ષા કાર્યાલય અંગ્રેજી કે હિન્દી ભાષામાં આ નિબંધોનું ભાષાંતર આપી નહિ શકે. તેથી ભાષાંતર કરવા અંગેનો પત્રવ્યવહાર કે ઈ-મેલ પણ પરીક્ષા કાર્યાલયને કરશો નહિ તેવી નમ્ર વિનંતી છે.
૭. ગુજરાતી ભાષા વાંચી, લખી કે બોલી ન શકતા હોય તેવા પરીક્ષાર્થીઓએ માતા-પિતા, વડીલો કે અન્ય સ્વજનો-સ્નેહીઓ પાસે વંચાવીને નિબંધનો ભાવાર્થ સમજી પોતાની રીતે, પોતાના શબ્દોમાં લખીને તૈયારી કરવાની રહેશે.
૮. One essay from the list of essays will be asked in the Final Examination of March-2016.

સત્સંગ પ્રવીણ

નિબંધ - ૧

પરાત્પર શ્રદ્ધાનાં પુષ્પો

Divine Faith

તાજેતરમાં સાહિત્યસર્જન અને અધ્યાત્મના જગતમાં એક અપૂર્વ ઘટના બની ગઈ. એ ઘટના એટલે ૮૪ વર્ષના એક શિષ્યે એક ૮૪ વર્ષના પોતાના ગુરુજીને આપેલી સ્નેહસભર અંજલિ.

એ શિષ્ય એટલે અણુવિજ્ઞાનના જગવિખ્યાત મહર્ષિ તથા પૂર્વ રાષ્ટ્રપતિ ડૉ. એ.પી.જે. અબ્દુલ કલામ અને ગુરુજી એટલે જગવંદનીય મહાપુરુષ પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ.

અને એ અંજલિ એટલે પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજની આધ્યાત્મિક અનુભૂતિઓ વિશે ડૉ. કલામે લખેલું પુસ્તક ‘ટ્રેન્સેન્ડન્સ.’ કોઈપણ એક રાષ્ટ્રના રાષ્ટ્રપ્રમુખે કોઈપણ ધર્મના એક આધ્યાત્મિક વડા પર આવું પુસ્તક લખ્યું હોય એવું ઇતિહાસમાં સર્વ પ્રથમ વખત બન્યું છે, જેનું પ્રકાશન કર્યું છે જગ-વિખ્યાત પ્રકાશન સંસ્થા હાર્પર કોલિન્સે. જેની પાકા પૂંઠાની પ્રથમ આવૃત્તિ જ એક લાખની સંખ્યામાં પ્રકાશિત થઈ છે, જે એક વિક્રમસર્જક ઘટના છે.

આજથી પંદર વર્ષ પહેલાં સન ૨૦૦૧માં નવી દિલ્હીમાં ડૉ. કલામ પ્રથમ વખત પ્રમુખસ્વામીજીના વ્યક્તિગત સંપર્કમાં આવ્યા હતા. લગભગ એકાદ કલાક ચાલેલી એ મુલાકાત કલામસાહેબના જીવનમાં એક અવિસ્મરણીય વળાંક લાવનારી બની રહી. એ મુલાકાતના અંતે ડૉ. કલામે કહ્યું હતું : ‘સંત તિરુવલ્લુવરની એક વાત આજે મને યાદ આવે છે. તિરુવલ્લુવર કહે છે કે હૃદયમાં વર્ષો સુધી સંઘરી રાખેલી કોઈક વેદના ક્યારે શાંત થાય? જ્યારે ભગવાનના સાક્ષાત્કારયુક્ત બ્રહ્મસ્વરૂપ મહાપુરુષ મળે ત્યારે આપોઆપ એ શાંત થતી અનુભવાય છે. આજે પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામીજીને મળતી વેળાએ મને એવી અનુભૂતિ થઈ છે. વર્ષો સુધી મારા હૃદયમાં સંઘરેલી ભારત માટેની વેદનાઓનો અંત આવ્યો છે. મને અપાર શાંતિનો અનુભવ થયો છે.’ અને સાથે જ, જ્યારે કલામસાહેબે વિદાય લીધી ત્યારે એમના મુખ પર અપાર સંતોષ અને શાંતિના સમુદ્રમાંથી ઝબકોળાઈને બહાર આવ્યા હોય, તેવી અનુભૂતિ છવાયેલી હતી.

અને બીજી તરફ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ એ મુલાકાત પછી બોલી ઊઠ્યા હતા : ‘આજે એક ઋષિતુલ્ય માણસને મળ્યા એટલે મારી તબિયત સારી થઈ ગઈ!’ અને સાથે જ તે દિવસે સ્વામીશ્રીના નાદુરસ્ત સ્વાસ્થ્ય વચ્ચે પણ તેઓના નાડીના ધબકારા નોર્મલ થયા હતા !

આ પહેલી મુલાકાત, ડૉ. કલામ માટે જીવનભર પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ પ્રત્યેના સતત આકર્ષણનું એક પવિત્ર બીજ બની રહી. ત્યાર પછી સતત ૧૪ વર્ષ દરમ્યાન રૂબરૂ કે ફોન પર એ મુલાકાતોનો સિલસિલો તો ચાલતો રહ્યો, પરંતુ કલામસાહેબ કહે છે કે, ‘મારો એક પણ દિવસ એવો નથી ગયો કે જે દિવસે મેં પ્રમુખસ્વામી મહારાજને યાદ કર્યા ન હોય!’ એક રીતે માઈલોના માઈલોનું સ્થૂળ અંતર હોવા છતાં બંને વચ્ચે એક અદૃષ્ટ આધ્યાત્મિક સેતુ સંધાયેલો રહ્યો, જેના દ્વારા પવિત્ર પ્રેરણાઓનો સંવાદ ચાલતો જ રહ્યો.

મજાની વાત તો એ છે કે ડૉ. કલામ એક પ્રખર વિદ્વાન તરીકે ભારત અને ભારત બહારની અનેક યુનિવર્સિટીઓમાંથી ૪૮ વખત પીએચ.ડી.ની ડિગ્રીઓ પામ્યા છે ! અને પ્રમુખસ્વામી મહારાજ પીએચ.ડી.નું પૂરું નામ પણ જાણતા નથી ! ડૉ. કલામ અંગ્રેજી ભાષા બોલે છે, ગુજરાતીનું એક વાક્ય પણ સમજી શકતા નથી ! અને પ્રમુખસ્વામી મહારાજ ગુજરાતી ભાષા બોલે છે, કલામનું બોલેલું અંગ્રેજીનું એક વાક્ય પણ તેમને માટે કોઈ અજાણી બોલી છે ! કલામ એક મુસ્લિમ પરિવારમાંથી આવે છે, અને પ્રમુખસ્વામી મહારાજ હિન્દુધર્મના એક વડા છે. કલામ એક પ્રખર અણુવિજ્ઞાની છે ને પ્રમુખસ્વામી મહારાજ

અધ્યાત્મવિદ્યાના પરમ જ્ઞાની છે ! આમ જુઓ તો, બંને વચ્ચે અનેક રીતે વિરોધાભાસ છે, પરંતુ પ્રમુખસ્વામી મહારાજની પરાત્પર દિવ્યતા અને ડૉ. કલામના હૃદયની ઉત્કૃષ્ટ મુમુક્ષુતાએ જગતને એક નવા જ સંબંધની ઓળખ આપી. હા, બંનેના સંવાદોમાં ભાષાંતરકર્તા તરીકે ક્યારેક બ્રહ્મવિહારીદાસ સ્વામી કે ક્યારેક આત્મસ્વરૂપદાસ સ્વામી વગેરે સંતો હોય છે, પરંતુ એ સૌએ અનુભવ્યું છે કે પવિત્ર હૃદયના તાર જ્યાં રણઝણતા હોય ત્યાં શબ્દોનું સામ્રાજ્ય વામણું બની જાય છે. એટલે જ, પ્રમુખસ્વામી મહારાજ સાથે જે આધ્યાત્મિક સંવાદ થયો, તે ડૉ. કલામના હૃદયને આરપાર વીંધી ગયો. એટલું જ નહીં, ડૉ. કલામના રોમરોમમાં શ્રદ્ધાની એવી જ્યોતિ જગાવી ગયો, જેની ખુદ તેમને પણ કલ્પના નહોતી ! ડૉ. કલામના અનેક ઉદ્ગારોમાં પ્રમુખસ્વામીજી પ્રત્યે એ શ્રદ્ધા ને આદરનો સ્વર વ્યક્ત થતો રહ્યો. આ રહ્યા તેના કેટલાક અંશો...

● સન ૨૦૦૪માં ડૉ. કલામના જન્મ દિને સ્વામીશ્રીએ આશીર્વાદ આપ્યા ત્યારે, ફોન પર તેનો ભાવનુવાદ સમજાવતા બ્રહ્મવિહારીદાસ સ્વામીને ડૉ. કલામે પૂછ્યું હતું કે ‘તમે પ્રમુખસ્વામીજીને પૂછો કે તેઓ મને સાધુદીક્ષા આપશે ?’ સ્વામીશ્રીએ તેઓને કહ્યું કે ‘અમે તો તમને સાધુ જ સમજીએ છીએ.’ ડૉ. કલામ કહે, ‘પણ પ્રમુખસ્વામીજી મને લેખિત સર્ટિફિકેટ આપશે કે હું સાધુ છું ?’

સ્વામીશ્રીએ હા કહી ત્યારે આનંદવિભોર થતાં ડૉ. કલામ બોલી ઊઠ્યા હતા, ‘પ્રમુખસ્વામીજીનું એ સર્ટિફિકેટ એ તો મારે મન ભગવાનનું જ આપેલું સર્ટિફિકેટ છે !’

● તા. ૧૦-૨-૨૦૦૭ના રોજ મુંબઈ ખાતે સ્વામીશ્રીની એન્જિયોગ્રાફી થવાની હતી, તેની ડૉ. કલામને જાણ થઈ, એ જ ક્ષણથી તેઓ સ્વામીશ્રી સાથે ફોન પર વાત કરવા ઉત્સુક હતા. પરંતુ સ્વામીશ્રી મેડિકલ પરીક્ષણ હેઠળ હોવાથી એ શક્ય ન બન્યું, ત્યારે ડૉ. કલામે ફોન દ્વારા સંદેશ આપ્યો હતો કે એન્જિયોગ્રાફીના એ સમય દરમિયાન બપોરે ૧:૦૦થી ૨:૦૦ની વચ્ચે હું પ્રમુખસ્વામીજીના સ્વાસ્થ્ય માટે માળા કરીશ. અને બીજે દિવસે તેમણે ખરેખર માળા ફેરવીને સ્વામીશ્રીને ફોન કરતાં ભાવવિભોર થઈ જણાવ્યું હતું : ‘સ્વામીજી, આપણા રાષ્ટ્રનું સૌથી મહાન ભલું આપે કર્યું છે. આપે જે કર્યું છે તે કરવા માટે કોઈ શક્તિમાન નથી. હું જાણું છું તે મુજબ, કોઈ વ્યક્તિએ આપણા દેશ માટે આવું કાર્ય કર્યું નથી. કોઈ એક વ્યક્તિ આટલા બધા લોકોનાં મનને અને આટલી બધી ઊર્જાને એકત્રિત કરીને અક્ષરધામ જેવું સર્જન કરી શકી નથી. સ્વામીજી, એ આપણા દેશને અને માનવ સભ્યતાને આપનું સૌથી મોટું પ્રદાન છે.’

સ્વામીશ્રીએ પ્રત્યુત્તરમાં કહ્યું હતું : ‘બધું ભગવાનની ઈચ્છાથી થયું છે. યોગીબાપાની કૃપાથી, ભગવાનની કૃપાથી થાય છે. આપ પણ ભગવાનના માણસ છો. આપને ભગવાનમાં શ્રદ્ધા છે. આપના દ્વારા પણ દેશના સારાં સારાં કાર્યો થતાં રહેશે, લાખો લોકો સુખી થાય તેવાં કાર્ય થશે. સતત પ્રાર્થના કરીએ છીએ.’

ડૉ. કલામે કહ્યું : ‘હું આપને દરરોજ યાદ કરું છું. મારો એક પણ દિવસ એવો પસાર થતો નથી કે જ્યારે મારી પાસે આવેલા કોઈ પણ અતિથિને મેં અક્ષરધામનો મહિમા કહ્યો ન હોય ! આપે આપણી સંસ્કૃતિના વારસાનું જે સર્જન કર્યું છે, એ હજુ સુધી કોઈ કરી શક્યું નથી. માત્ર આપ જ કરી શક્યા છો. દરરોજ દેશ અને વિદેશના હજારો લોકો અક્ષરધામનાં દર્શને આવે છે તે બધા જ ભારતીય હોવાનું ગૌરવ અનુભવીને, અને વધારે સારા માનવ બનીને બહાર આવે છે. એટલે માત્ર હું જ નહીં, સમગ્ર દેશ આપના સ્વાસ્થ્ય માટે પ્રાર્થના કરે છે.’

અને ખરેખર, ડૉ. કલામે છેલ્લાં ૧૪ વર્ષમાં પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીનો મહિમા ઉચ્ચારવાની એવી એક પણ તક જતી કરી નથી. સન ૨૦૦૬માં ભારતનાં તમામ રાજ્યોની હાઈકોર્ટના મુખ્ય ન્યાયાધીશોની એક કોન્ફરન્સમાં ન્યાય, વિજ્ઞાન અને દૈવીશક્તિની વાત કરતાં તેઓએ પ્રવચનમાં કહ્યું કે ‘વિજ્ઞાન જે નથી કરી શકતું એ પ્રમુખસ્વામીજીની શક્તિથી થઈ શકે છે, એનો મૂર્તિમાન દાખલો અક્ષરધામ છે. તમે બધાએ ન જોયું હોય તો જોઈ લેજો.’

● તા. ૨૩-૭-૨૦૧૦ના રોજ ડૉ. કલામે ગાંધીનગર ખાતે અક્ષરધામમાં પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીની પ્રેરણાથી નિર્મિત નૂતન વોટર શો નિહાળીને સ્વામીશ્રીને ફોન પર જણાવ્યું કે ‘આપે આ કાર્ય કર્યું તે અત્યંત અદ્ભુત છે. મારું માનવું છે કે ભારતની સ્કૂલોના તેરથી ઓગણીસ વર્ષના બધા જ વિદ્યાર્થીઓને આ બતાવવું જોઈએ. મેં અહીં જે એક નચિકેતાને જોયો, એવા હજારો નચિકેતા આપના દ્વારા તૈયાર થશે, એવી મારી શ્રદ્ધા છે.’

● ડૉ. કલામને પ્રમુખસ્વામી મહારાજના દિવ્ય આધ્યાત્મિક વ્યક્તિત્વમાં સમગ્ર વિશ્વની ભલાઈનું પ્રતિબિંબ દેખાય છે. ગત વર્ષે તા. ૧૧-૩-૨૦૧૪ના રોજ તેઓ પ્રમુખસ્વામી મહારાજને સારંગપુર ખાતે મળ્યા ત્યારે પ્રતિકૂળ સ્વાસ્થ્યને કારણે સ્વામીશ્રી તેઓની સાથે એક વાક્ય પણ બોલ્યા નહોતા. તેમણે માત્ર હૂંફાળું સ્મિત આપ્યું હતું. સ્વામીશ્રીના એ સ્મિતથી, અને

સ્વામીશ્રીએ તેમનો હાથ પકડ્યો હતો એ સ્પર્શથી રોમાંચિત થઈ જતાં ડૉ. કલામે લોકોને સંબોધતાં કહ્યું હતું : ‘અમે અત્યારે મળ્યા, ત્યારે પ્રમુખસ્વામીજી હસ્યા. મને લાગે છે કે જ્યારે પ્રમુખસ્વામી હસે છે, ત્યારે આખું વિશ્વ હસે છે !’

વાત માત્ર આટલાથી અટકતી નથી. પોતાની શ્રેષ્ઠ સિદ્ધિઓનો યશ પણ તેઓ શ્રદ્ધાપૂર્વક પ્રમુખસ્વામીજીને આપે છે. ડૉ. કલામની શ્રદ્ધાની એ ચરમસીમા તો જુઓ !

ભારતના રાષ્ટ્રપતિ તરીકે તેમણે યુરોપના તમામ દેશોની યુરોપિયન પાર્લામેન્ટમાં તા. ૨૪-૪-૨૦૦૭ના રોજ એક ઐતિહાસિક પ્રવચન આપ્યું હતું. ડૉ. કલામના એ પ્રવચનનો એવો અદ્વિતીય પ્રભાવ સૌનાં દિલો-દિમાગ પર છવાઈ ગયો કે યુરોપિયન દેશોના અનેક વડાપ્રધાનો, રાષ્ટ્રપ્રમુખો સહિત સૌએ ઊભા થઈને તેમને ‘સ્ટેન્ડિંગ ઓવેશન’નું બહુમાન આપ્યું, અને યુરોપિયન પાર્લામેન્ટના પ્રેસિડેન્ટ મિ. હેન્સગર્ટ પોટરિંગે ત્યારે પાર્લામેન્ટને સંબોધતાં કહ્યું હતું : ‘યુરોપિયન પાર્લામેન્ટમાં આજ સુધી અપાયેલાં પ્રવચનોમાં આ સર્વશ્રેષ્ઠ પ્રેરણાત્મક પ્રવચન હતું.’ ડૉ. કલામે પોતાની આ સિદ્ધિનો યશ પ્રમુખસ્વામી મહારાજને આપતાં લખ્યું કે ‘મને એમ અનુભવ થયો કે એ દિવસે યુરોપિયન પાર્લામેન્ટમાં મારામાં રહીને પ્રમુખસ્વામીજી બોલી રહ્યા હતા !’

ડૉ. કલામની વિશેષતા એ રહી છે કે તેઓ જ્યારે જ્યારે પ્રમુખસ્વામી મહારાજ પાસે આવ્યા છે ત્યારે એક બાળસહજ વિસ્મય લઈને આવ્યા છે. દેશ-વિદેશના અસંખ્ય રાજકીય નેતાઓ, અનેકવિધ ક્ષેત્રોના માંધાતાઓ, હજારો વૈજ્ઞાનિકો અને દેશ-વિદેશના નામાંકિત પ્રતિભાસંપન્ન પ્રબુદ્ધો સાથે અનેક વાર્તાલાપો અને ચર્ચાઓ કર્યા બાદ, સામાન્ય રીતે માણસમાં કંઈક પામવાની બાળસહજ જિજ્ઞાસા આઘમી જાય છે. પરંતુ એ બધું જ કર્યા બાદ પણ ડૉ. કલામના રોમરોમમાં એ જિજ્ઞાસા જીવતી રહી ! એટલે જ જગતમાં એક આદર્શ વ્યક્તિત્વ તરીકેનું જીવન જીવીને આદરણીય સ્થાન મેળવ્યા બાદ પણ ડૉ. કલામે, એક નવજાત વિદ્યાર્થીની જેમ, આંખોમાં વિસ્મય આંજીને એક મહાન ગુરુ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના વ્યક્તિત્વને આરપાર સમજવાનો હૃદયથી પ્રયાસ કર્યો છે. અને પરિણામ ?

પરિણામે ડૉ. કલામના હૈયે એક ઝંખના જન્મી હતી - પ્રમુખસ્વામીજીનાં દિવ્ય જીવન, સંદેશ અને કાર્યોની સમીક્ષા કરતો ગ્રંથ લખવાની. જેથી, જગતને કંઈક દિશા મળે, આવનારી અનેક પેઢીઓને પવિત્ર પ્રેરણાઓનું ઝરણું મળે. ડૉ. કલામના હૈયે એક શ્રદ્ધા ગૂંજતી હતી કે પ્રમુખસ્વામીજીના જીવન-સંદેશ વિશેનો એ ગ્રંથ સમસ્ત માનવજાતનું ભલું કરશે. એટલે જ, છેલ્લાં દસ વર્ષમાં જુદા જુદા સમયે તેઓ પ્રમુખસ્વામીજી સમક્ષ પોતાની એ ઝંખના વ્યક્ત કરતા રહ્યા હતા. એક-બે પ્રસંગો સ્મરણીય છે :

તા. ૧૧-૦૮-૨૦૦૬ના રોજ દિલ્હી ખાતે ડૉ. કલામે પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીની દર્શન-મુલાકાત વેળાએ કહ્યું હતું કે ‘જ્યારે વિશ્વ અશાંતિ, મુશ્કેલીઓમાં પીડાય છે ત્યારે મને વારંવાર એમ લાગે છે કે અક્ષરધામ વિશ્વમાં શાંતિ લાવવા માટે બહુ મોટો ભાગ ભજવશે. હું અહીં આ રમણીય પવિત્ર સ્થાનમાં બીજી વાર આવ્યો છું. મને અહીં બહુ શાંતિ અનુભવાય છે. નવું શીખવા મળે છે. એટલે મને એક વિચાર આવ્યો છે, એ આપ સમક્ષ રજૂ કરું છું. આ દુનિયામાં લોકો જીવન જીવે છે, પણ તેમની પાસે જીવવાનું માર્ગદર્શન નથી. તેથી સૌ અંતરમાં દુઃખી રહ્યા કરે છે. તો આપણે બંને ભેગા થઈને એવું કંઈક માર્ગદર્શન લોકોને આપીએ કે જેથી લોકોનાં જીવનમાં શાંતિ, સમૃદ્ધિ અને સુખ આવે.’

એમ કહીને તેમણે પુસ્તક લખવાનો પ્રસ્તાવ સ્વામીશ્રી સમક્ષ મૂક્યો હતો. સ્વામીશ્રીએ તેમને આશીર્વાદ આપતાં કહ્યું હતું, ‘આપની ભાવના ઘણી સારી છે ને બહુ સુંદર વિચારો કહ્યા છે. આ જે વિચારો છે, એ ભગવાનના વિચારો છે. બીજાનું સારું કરવાના વિચારો એ મહાપુરુષોના વિચારો છે. એ સામાન્ય માણસને આવી ન શકે. આપ પુણ્યાત્મા છો. પૂર્વનાં ઘણાં પુણ્ય છે, એટલે આ જન્મમાં કેવળ દેશનું જ નહીં, પણ દુનિયાના લોકોનું સારું થાય એવા વિચારો આવે છે. આપની ભાવના સારી છે. આ હરિકૃષ્ણ મહારાજ, ગુણાતીતાનંદ સ્વામીના વખતના છે ને યોગીજી મહારાજે એમની ૬૦ વર્ષ પૂજા કરેલી છે. એમની સમક્ષ આપના વિચારો રજૂ કરીએ છીએ, તો ભગવાન એ વિચારો સિદ્ધ કરશે.’

પછી સ્વામીશ્રીએ તેઓને કહ્યું : ‘જ્યાં સુધી આ દેહને આપણે આપણું સ્વરૂપ માનીએ છીએ ને ‘હું કરું છું’ એમ માનીએ છીએ, ત્યાં સુધી શાંતિ ન થાય. એટલે અક્ષરબ્રહ્મરૂપ થઈ ભગવાનની ઉપાસના કરવી. પોતાને કોઈ બ્રહ્મરૂપ માને તો પછી ગમે તે અપમાન કે તિરસ્કાર કરે, પણ પોતે એમ જ માને કે મારી કોઈ જ્ઞાતિ કે જાતિ નથી, મારો કોઈ હોદ્દો કે અધિકાર નથી, હું ભગવાનનો દાસ છું, સેવક છું, તો શાંતિ, શાંતિ, શાંતિ થઈ જાય. આ સિદ્ધ થાય તો ‘આપ મુસલમાન છો, હું હિંદુ છું’, ‘આપ રાષ્ટ્રપતિ છો, હું સાધુ છું’ એ ભાવના જ છૂટી જાય છે. એવી ભાવના આપનામાં છે, એટલે આપને આ રાષ્ટ્રપતિના

હોદ્દા-અધિકારનું માન નથી.’ આ વાત સાંભળીને ડૉ. કલામ રોમાંચિત થઈ ગયા. તેમણે કહ્યું, ‘આપ સો વર્ષ સુધી આ પૃથ્વી પર બિરાજો. જીવેમ શરદઃ શતમ્ । પસ્યેમ શરદઃ શતમ્ ॥’

તા. ૧૮-૦૭-૨૦૧૦ના રોજ દિલ્હીમાં ડૉ. કલામે હૃદયની ભાવનાઓ વ્યક્ત કરતાં પુનઃ સ્વામીશ્રીને કહ્યું હતું, ‘મારું એક સ્વપ્ન છે કે આપની સાથે રહીને મારે એક પુસ્તક લખવું છે. આપે કરેલા પ્રવચનમાંથી મુદ્દા લઈને ચર્ચા કર્યા પછી હું એમાંથી પુસ્તક તૈયાર કરીશ. જેમાં ૧૨ પ્રકરણો મારે લખવાં છે.’ એમ કહીને તેમણે પુસ્તક અંગેના પોતાના વિચારો સ્વામીશ્રી સમક્ષ રજૂ કર્યા અને કહ્યું, ‘એક વર્ષ પછી પુસ્તક તૈયાર થઈ ગયું હશે. તે વખતે પુસ્તકને ને મને આશીર્વાદ આપજો. આપે જે દેશ-વિદેશમાં અક્ષરધામ કર્યા છે, એ કઈ રીતે સાકાર કર્યું એ મારે આમાં લખવું છે.’

સ્વામીશ્રીએ આશીર્વાદ આપ્યા. ત્યારપછી તેઓ સંતોને કહે, ‘હું પ્રમુખસ્વામીજીને જ્યારથી મળ્યો છું ત્યારથી એક જ વાતનું પ્રતિપાદન કરું છું કે હૃદયમાં ધર્મ રહેવો જોઈએ. ધર્મ હશે તો ચારિત્ર્યની શોભા રહેશે. ચારિત્ર્ય હશે તો ઘરમાં સંવાદિતા આવશે. ઘરમાં સંવાદિતા હશે તો દેશ વ્યવસ્થિત રહેશે અને દેશ વ્યવસ્થિત રહેશે તો વિશ્વમાં શાંતિ રહેશે.’

સ્વામીશ્રી કહે, ‘બધું ભગવાનની કૃપાથી અને અમારા ગુરુના આશીર્વાદથી થયું છે. અમારા ગુરુ યોગીજી મહારાજનો સંકલ્પ હતો કે યમુના કિનારે મંદિર થવું જોઈએ, એટલે અહીં અક્ષરધામ થયું છે. યોગીજી મહારાજ એવા સંત હતા કે જે હંમેશાં આનંદમાં જ રહેતા.’ આટલું કહીને સ્વામીશ્રીએ બાજુમાં પડેલા ‘યોગીજી મહારાજની બોધકથા’ પુસ્તકના કવર પર છપાયેલી યોગીજી મહારાજની છબિ બતાવી. એ જોતાં જ ડૉ. કલામ બોલી ઊઠ્યા, ‘તેઓનું મુખ જોઈને જાણે કે અંદરથી આનંદ ઊભરાતો હોય એવું અનુભવાય છે ! યોગીજી મહારાજના સંકલ્પ તો આપે પૂરા કર્યા, પણ આપના હૃદયનો એવો કયો તીવ્ર સંકલ્પ સંકલ્પ છે?’

સ્વામીશ્રી કહે, ‘એમનો સંકલ્પ એ જ અમારો સંકલ્પ.’

આ સાંભળતાં જ અબ્દુલ કલામ ભાવમય થઈને બોલી ઊઠ્યા, ‘What a Great Gurubhakti !’

અહંશૂન્ય સ્વામીશ્રીની આવી ગુરુભક્તિથી ડૉ. કલામ રણઝણી ઊઠ્યા હતા. સ્વામીશ્રીની આ ગુરુમય નિર્મળ પ્રતિભાને પુસ્તકમાં સમાવવાનો તેમનો સંકલ્પ ત્યારે વધુ દૃઢ થયો. અને આ રીતે, તેમના મસ્તિષ્કમાં તો એક પુસ્તક આકાર પામી રહ્યું હતું. પરંતુ એ બ્લેક એન્ડ વ્હાઈટમાં બહાર પ્રગટ થઈ શક્યું નહોતું. એવામાં અચાનક જ સન ૨૦૧૪માં તેને ઉદ્દીપન મળી ગયું. ડૉ. કલામના સહલેખક અને વિજ્ઞાની પ્રો. અરુણ તિવારી કહે છે : ‘૨૦૧૪માં ડૉ. કલામ પ્રમુખસ્વામી મહારાજનાં દર્શને સારંગપુર આવ્યા હતા, ત્યારે હું તેમની સાથે હતો. તે વખતે ડૉ. કલામે મને કહ્યું કે ‘પ્રમુખસ્વામી મહારાજ વિશેની મારી અનુભૂતિઓ ઉપર પુસ્તક લખવાનો મેં ઘણાં વર્ષોથી નિર્ધાર કરી રાખ્યો છે. ઘણાં વર્ષોથી હું પ્રમુખસ્વામી મહારાજ સાથેની મારી આધ્યાત્મિક સંગતને શબ્દદેહ આપવા ઉત્સુક છું. પરંતુ ગમે તે કારણસર એ શક્ય નથી બની શક્યું.’ પરંતુ એ દિવસે, પ્રમુખસ્વામીજીના આરોગ્યને કારણે ચિંતિત થયેલા ડૉ. કલામે કહ્યું કે ‘જો હું મારા અનુભવોનું પુસ્તક તેમની હયાતીમાં તેમને હાથોહાથ નહીં આપી શકું તો મને સૌથી મોટો વસવસો રહી જશે.’

અને એ ક્ષણથી જ ડૉ. કલામને એક ચટકી લાગી ગઈ. થોડા જ દિવસોમાં તો સંશોધનો સાથે તેનો સંરજામ તૈયાર થવા માંડ્યો. ડૉ. કલામના હૈયેથી અનુભૂતિઓનું સવતું ઝરણું જ અહીં પુસ્તક રૂપે આકાર લેવાનું હતું. એથી, ડૉ. કલામ પોતાના વિચારોને વ્યક્ત કરે, અને પ્રો. અરુણ તિવારી એને કાગળ પર નિતારે. પરંતુ એક ટેબલ-બુરશી પર આમને-સામને બેસીને જ ડૉ. કલામ અને સહલેખક પ્રો. અરુણ તિવારીએ આ પુસ્તક નથી લખ્યું. તો કેવી રીતે લખાયું આ પુસ્તક ? પ્રો. અરુણ તિવારી કહે છે : ‘ડૉ. કલામ નિત્ય ચાલવાના આદતી છે. ચાલતાં ચાલતાં તેઓ વિચારો વ્યક્ત કરે. અને તેમની સાથે ચાલતા હોઈએ ત્યારે આપણે એક વાત યાદ રાખવી પડે કે તેઓ અચાનક જ તેમની ચાલવાની દિશા બદલી નાખે છે. અને બીજી બાબત, તેઓ એક ‘એબસ્ટ્રેક થિંકર’ છે. એટલે જ્યારે તેઓ કોઈ એકદમ જટિલ વિષય તમને સમજાવતા હોય, ત્યારે અચાનક જ પૂછી બેસે : ‘અહીંનાં જાંબું તમે ખાધાં છે ?’ અને અહીં જ આપણે ‘ક્લીન બોલ્ડ’ થઈ જઈએ ! અરે ! એક ક્ષણ પહેલાં તો તેઓ બ્રહ્મના આનંદની વાત કરતા હતા અને બીજી જ ક્ષણે અચાનક તેઓ જાંબુની વાત માંડે છે ! હકીકતે તો આ એમની એક નિરાળી પદ્ધતિ છે. તેઓ આપણને જે કાંઈ કહી રહ્યા છે તે આપણે બરાબર પામી રહ્યા છીએ કે નહીં, તે ચકાસવાની અને આપણને સતત જાગરુક રાખવાની આ એમની એક પદ્ધતિ છે !

તેમની સાથે ચાલવા દરમ્યાન અમારાં એવાં ઓછાંમાં ઓછાં પચ્ચીસેક જેટલાં સત્રો થયાં હશે. તેઓ ચાલતાં ચાલતાં તેમની વાત કહે અને તે હું નોંધી લઉં. ઘણું ખરું તો દિલ્હી ખાતેના તેમના નિવાસસ્થાને જ આ બનતું. અને હૈદરાબાદમાં

રાજભવનમાં ૩-૪ વખત આ રીતે ચાલવાનો પ્રસંગ બન્યો હશે. તેમનું ચાલવાનું ક્યારેક અસાધારણ સમયે પણ થતું, જેમ કે ક્યારેક મોડી રાત્રે ૧:૦૦ વાગે પણ થાય !'

આમ, ડૉ. કલામ પોતાની શબ્દાતીત અનુભૂતિઓને શબ્દસ્થ કરતા રહ્યા. પ્રમુખસ્વામીજીનાં જીવન-કાર્ય-સંદેશ વિશે સંશોધન કરતા રહ્યા. ધીમે ધીમે પુસ્તક આકાર લેવા લાગ્યું. પુસ્તકનાં પ્રકરણો અને તેનું એક બંધારણ ઘડાવા લાગ્યું. અને આખરે એ પ્રખર વિજ્ઞાનીએ એ ગુણાતીત મહાપુરુષને હૃદયની ઊર્મિઓથી બંધાયેલા શબ્દોથી પૂજીને જગતને ગ્રંથ આપ્યો : 'ટ્રેન્સેન્ડન્સ !'

પ્રો. અરુણ તિવારી આ પુસ્તકની છણાવટ કરતાં કહે છે : 'આ ટ્રેન્સેન્ડન્સ એક સંવાદિતાભર્યો ગ્રંથ છે. કોઈ એક ઈમારતને જેમ સ્તંભ હોય છે, તેમ આ પુસ્તકમાં ચાર સ્તંભ જેવાં ચાર પ્રકરણો છે. પ્રથમ સ્તંભ છે - ડૉ. કલામ અને પ્રમુખસ્વામી મહારાજ વચ્ચેના સંવાદો. બીજો સ્તંભ છે - બી.એ.પી.એસ. સંસ્થાનાં મહાન કાર્યો, જેવાં કે દાયકાઓથી લડતી બે લડાયક ક્ષત્રિય કોમને શાંત કરી, વ્યસનમુક્તિ કાર્યક્રમો કર્યા, ઘરસભાઓ દ્વારા પરિવારોમાં શાંતિ સ્થાપી. સામાજિક દૃષ્ટિએ જોઈએ તો આ બધાં એવાં ક્રાંતિકારી પગલાં છે કે જેની કોઈ તુલના ન થઈ શકે. આની તોલે આવે એવું કાર્ય મેં બીજે ક્યાંય જોયું નથી. અને આ બધાંથી પણ વિશેષ તો છે અક્ષરધામ !

જે લોકો આજેય ભારતને જંત્ર-મંત્ર, નટ-બજાણિયા અને મદારીઓનો દેશ ગણે છે, એવા વિદેશી પર્યટકો ભારતની ધરતી ઉપર આવીને અક્ષરધામને નિહાળે છે ત્યારે તેનું ભવ્ય સ્થાપત્ય અને કલાત્મક નકશી જોઈને સ્તબ્ધ થઈ જાય છે. અને માત્ર અક્ષરધામ જોઈને ભારત વિશેની એ વિદેશીઓની ધારણા બદલાઈ જાય છે. અને હવે તો એમના દેશોમાં પણ આ સંસ્થા એવા ભવ્ય સ્થાપત્યોનું નિર્માણ કરી રહી છે. આ એક મોટું પરિવર્તનનું મોજું છે. સમગ્ર રાષ્ટ્ર માટે આ ગૌરવની વાત છે.

ત્રીજો સ્તંભ અત્યંત રસપ્રદ છે, કારણ કે હું એટલું પામી શક્યો છું કે પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ એક મહાન આધ્યાત્મિક વિભૂતિ છે. પરંતુ તેઓએ જે રીતે અક્ષરધામ જેવા અનેક પ્રોજેક્ટ્સનું નિર્માણ કર્યું છે, તે જોતાં એમ લાગે છે કે તેઓ કોઈ પણ એન્જિનિયર કરતાં એક વધુ સારા એન્જિનિયર છે, કોઈપણ આર્કિટેક્ટ કરતાં વધુ ચઢિયાતા આર્કિટેક્ટ છે, અને એ બધાયથી ઊંચે તેઓ એક સૌથી પરફેક્ટ મેનેજમેન્ટ નિષ્ણાત છે. દરેક રીતે નજર સામે એક આદર્શ તરીકે પ્રમુખસ્વામી મહારાજની છબી ઊભરી આવે છે. આ ખરેખર આશ્ચર્યચકિત કરનારી વાત છે.

બીજી બાજુ, ડૉ. કલામ એક પ્રખર વિજ્ઞાની છે, આધ્યાત્મમાં પણ એમણે ઘણું ઊંડાણ મેળવ્યું છે. એટલે મને સ્પષ્ટ થઈ ગયું કે વિજ્ઞાન અને આધ્યાત્મિકતાને અલગ અલગ માનવામાં આવે તો તે એક મોટી ભૂલ છે. તે બંને એક જ સિક્કાની બે બાજુ છે.

અને એટલે જ, અમે કેટલુંક સંશોધન કર્યું ત્યારે વિશ્વના મહાન વૈજ્ઞાનિકો વિશે ઘણું વધુ જાણવા મળ્યું. એ મહાન વિજ્ઞાનીઓ ખૂબ આધ્યાત્મિક વૃત્તિના લોકો હતા. તેમાંથી બન્યું ત્રીજું પ્રકરણ, જે અધ્યાત્મ ને વિજ્ઞાનના સંયોજનની વાત કરે છે.

અને ચોથું પ્રકરણ છે - નેતૃત્વ વિશે. પ્રમુખસ્વામી મહારાજના નેતૃત્વ અને તેમના મેનેજમેન્ટ વિશે વાત કરું તો... પ્રમુખસ્વામી મહારાજ જેવું નેતૃત્વ અને મેનેજમેન્ટ મેં આજ સુધીમાં ક્યાંય જોયું નથી. તેનું નિરૂપણ એટલે ચોથું પ્રકરણ. ડૉ. વિક્રમ સારાભાઈ, વર્ગીસ કુરિયન જેવા સર્જનાત્મક લીડર્સને પણ અમે આ પ્રકરણમાં મૂક્યા છે.'

સાચે જ, ચાર મુખ્ય વિભાગમાં લખાયેલા આ પુસ્તકનું પ્રત્યેક પૃષ્ઠ વાંચનારને જકડી રાખે છે. કારણ કે તેમાં સાચા અનુભવોની હૃદયસ્પર્શી ભાષા છે.

પ્રમુખસ્વામીજીના આધ્યાત્મિક મહાસાગરમાંથી ખોબલે ખોબલે ભરીને અનુભૂતિઓનાં નીર ડૉ. કલામ 'ટ્રેન્સેન્ડન્સ'માં ઠાલવે છે, જેને વાંચીને કોઈપણ તેમાં ભીંજાયા વિના રહી શકે તેમ નથી.

પ્રમુખસ્વામીજીને 'ટ્રેન્સેન્ડન્સ' પુસ્તક અર્પણ કરતાં કલામસાહેબ કહે છે : 'આપનું જીવન ખરેખર મહાન છે. આ પુસ્તક દ્વારા તે અભિવ્યક્ત કરવાનો પ્રયત્ન અમે કર્યો છે. એક કેવું મહાન જીવન ! એક હેતુસભર જીવન ! એક દિવ્ય જીવન !'

સાચે જ, 'ટ્રેન્સેન્ડન્સ' દ્વારા સ્વામીશ્રીના એ દિવ્ય જીવનનો એક અપૂર્વ આસ્વાદ કરાવવાનું એક અપૂર્વ કાર્ય ડૉ. કલામે કર્યું છે. જેનો સંતોષ વ્યક્ત કરતાં ડૉ. કલામે પ્રો. તિવારીને કહ્યું હતું : 'માય મિશન ઈઝ નાઉ ઓવર.'

જેમણે જેમણે આ પુસ્તક વાંચ્યું છે એવા અનેક પ્રખર વિચક્ષણ પ્રબુદ્ધો કહે છે કે આ ગ્રંથ ભારતના આધ્યાત્મિક સાહિત્યમાં રાજસિંહાસન શોભાવશે. કેમ કે, આ ગ્રંથ એક એવા મહાપુરુષ વિશે ઉચ્ચારે છે, જેમણે ક્યારેય પોતાના વિશે

વિચાર્યું નથી. સૌનું ભલું વિચારનારા એ મહાપુરુષની નાડીઓમાં માનવમાત્રનું હિત ધબકે છે. અને આ ગ્રંથ એવા મુઠ્ઠી ઊંચેરા મહામાનવે લખ્યો છે, જેમને આ ગ્રંથ લખીને કોઈ જ નામના કે કામના કમાવી નથી. એ નિઃસ્પૃહી આત્માનું એક જ સ્વપ્ન છે : એક સુખી અને શાંતિમય વિશ્વને જોવાનું... એટલે જ આ પુસ્તક, માનવજીવનને પવિત્ર મૂલ્યોનાં અમૃત ચટાડીને ટ્રેન્સેન્ડન્સ એટલે કે ‘પરાત્પર’ની અનુભૂતિ કરાવે છે.

આ પુસ્તક કોઈ એક સંપ્રદાયનું, કોઈ એક ધર્મનું કે કોઈ એક સમુદાય અને દેશનું બનવાને બદલે એક વૈશ્વિક ગ્રંથ બની રહ્યું છે. દેશ-વિદેશમાં સર્વત્ર તેનાં અનન્ય વધામણાં થઈ રહ્યાં છે. અનેક મહાનગરોમાં ટ્રેન્સેન્ડન્સના લોકાર્પણ કાર્યક્રમોનું સૂત્ર સંભાળનારા બ્રહ્મવિહારીદાસ સ્વામીને ચેન્નાઈના કાર્યક્રમ બાદ તામિલનાડુના પ્રસિદ્ધ એડવોકેટ પી.બી. રામનુજન્ લખે છે : ‘Excellent, Entertaining, Enlightening, Educative evening for us. A Million Thanks !’

આવા લાખો લોકોનાં હૈયાં માનવજાતની આવી એક અદ્વિતીય સેવા કરવા બદલ ડૉ. કલામ પ્રત્યે કૃતજ્ઞતાપૂર્વક સો સો સલામ કરે છે.

– સાધુ અક્ષરવત્સલદાસ ◆

શાસ્ત્રીજી મહારાજના ઐશ્વર્યથી થતી કૃપાસમાધિ અને મારી અનુભૂતિ : મોરીસ ફ્રિડમેન

Samadhi experienced with divine bliss of Shastriji Maharaj: Maurice Frydman

સન ૧૯૮૪માં યુરોપમાં પોલેન્ડ ખાતે યહૂદી પરિવારમાં જન્મ લેનાર શ્રી મોરીસ ફ્રિડમેન એક પ્રખર વિચક્ષણ આધ્યાત્મિક સાધક હતા. હિબ્રૂ, ઈંગ્લિશ, ફ્રેન્ચ, રશિયન, જર્મન, હિન્દી વગેરે ભાષાઓના વિદ્વાન શ્રી મોરીસે એક વૈજ્ઞાનિક તરીકે માત્ર ૨૦ વર્ષની ઉંમર સુધીમાં ઘણી પેટન્ટ પોતાના નામે રજિસ્ટર કરાવીને સિદ્ધિઓ હાંસલ કરી હતી. સન ૧૯૨૮માં તેઓ એક ઈલેક્ટ્રિકલ એન્જિનિયર તરીકે પેરિસમાં વ્યવસાય કરતા હતા તે દરમિયાન તેમણે પોલ બ્રન્ટન લિખિત રમણ મહર્ષિ વિષયક પુસ્તક વાંચ્યું અને ભારત આવવાની તીવ્ર ઝંખના જાગી. સન ૧૯૩૫માં મૈસૂર ખાતે ‘મૈસૂર ઈલેક્ટ્રિકલ્સ’ કંપનીની સ્થાપના માટે તેમને ભારત આવવાનું થયું અને રમણ મહર્ષિના યોગથી સદાને માટે ભારતમાં સ્થાયી થઈ ગયા. ગાંધીજીના યોગથી તેમણે ભારતના આઝાદીના જંગમાં પણ સેવાઓ આપી. ગાંધીજીના ચરખાના સ્પિનિંગ ચક્રની તેમણે કરેલી ડિઝાઇન આઝાદીના જંગનું પ્રતીક બની ગયું હતું. પાછળથી ભારતનાંદ નામ ધારણ કરીને વર્ધા ખાતે સેવા માટે જીવન સમર્પિત કરી દેનાર શ્રી મોરીસ, બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજે કરાવેલી કૃપાસમાધિના સાક્ષી બન્યા હતા. સન ૧૯૭૬માં તેઓ મુંબઈ ખાતે ૮મી માર્ચે મૃત્યુ પામ્યા ત્યાં સુધી તેમના મન પર તેની એક અમીટ છાપ રહી હતી. શ્રી મોરીસની કલમે લખાયેલો સન ૧૯૪૦માં સમાધિ વિષયક લેખ તત્કાલીન વર્તમાન પત્રમાં છપાયો હતો. તેનું ભાષાંતર અહીં પ્રસ્તુત છે...

હાલમાં હું અમદાવાદમાં મારા એક મિત્રને ત્યાં આવેલો છું. સંધ્યા સમયે સાંજે સાત વાગે તે મિત્રના આમંત્રણથી શ્રી શંકરલાલ ઠાકરને ત્યાં સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયની પૂજામાં દર્શનાર્થે ગયો હતો. તે સ્થળે કેટલીક ચિત્રમૂર્તિઓની સમક્ષ એક જનસમૂહ મેં જોયો. મૂર્તિઓનાં નામ શ્રીજીમહારાજ, અક્ષરપુરુષોત્તમ, પ્રાગજી ભક્ત અને શાસ્ત્રીજી છે એમ મને કહેવામાં આવ્યું. ડાબી બાજુનો વિભાગ પૂજા માટે નિયત કરેલો હતો અને કેટલાક સદ્ગૃહસ્થો જમણી બાજુએ બેઠા હતા. ચિત્રમૂર્તિઓ ડાબી બાજુના વિભાગમાં સ્ત્રીઓની સમક્ષ હતી. એક પ્રૌઢ વયની સ્ત્રી અને એક બાળા બીજી સ્ત્રીઓની આગળ ચિત્રમૂર્તિઓના સાંનિધ્યમાં બેઠાં હતાં. તેમણે બંનેએ મૂર્તિઓ પ્રત્યે હાથ જોડી તથા માથું નમાવીને એકાગ્રતાપૂર્વક ધ્યાન ધરવા માંડ્યું. હું સ્ત્રીઓ તથા પુરુષોના વિભાગ વચ્ચેની મર્યાદા પર બેઠો હતો. અને મારી પાછળ બેઠેલા સજ્જનોએ કીર્તન ગાવાનો આરંભ કર્યો. ચિત્રમૂર્તિઓની સમક્ષ બેઠેલી સન્નારીઓને મેં ધ્યાનપૂર્વક જોવા માંડ્યું. તેમનાં મુખારવિંદ શાંત થઈ ગયાં અને તેમણે મૂર્તિઓ પ્રત્યે વધુ ને વધુ એકાગ્રતાથી નિહાળવા માંડ્યું. એટલામાં તો પ્રૌઢ વયનાં બાઈએ હાથ જોડ્યાં અને દેખાવમાં સ્તબ્ધ બની ગયાં. થોડીવાર પછી તેમનું શરીર પાછળની બાજુ નમ્યું અને પીઠ પર પડી ગયું. તે વખતે પગ લાંબા થયા નહોતા, પરંતુ પન્નાસનમાં હોય છે તે પ્રમાણે વળેલા હતા. તેઓ જીવંત હોવાની કોઈ પણ નિશાની વગર સહેજ શ્વાસોચ્છવાસ સાથે પડી રહ્યાં હતાં. એક બે મિનિટ પછી પાસે બેઠેલી બાળા પણ સ્તબ્ધ બની અને પ્રૌઢ વયનાં બાઈ માફક પોતાની પીઠ પર પડી ગઈ. બંનેનાં શરીર કેવી રીતે કાષ્ઠવત્ છે તે જાણવા માટે મને કહેવામાં આવ્યું. મેં તેમના ગળા પાછળ હાથ મૂકી ઊંચકવા માંડ્યું. પણ શરીર સ્તબ્ધ અને લાકડાના કકડા જેવું વજનદાર હતું. તેથી હું ઘણી મહેનતે જમીનથી એક કે બે ઈંચ સુધી શરીર ઊંચકી શક્યો. ભજન ચાલુ હતું. દશ કે પંદર મિનિટ પછી બંને બાઈઓ તે સુપ્ત દશામાંથી જાગ્રત થઈ

અને મૂર્તિઓ પ્રત્યે ધ્યાનસ્થ દશામાં વિરાજમાન થઈ. નાની બાળાએ હાથમાં આરતી કે ફૂલ નહીં હોવા છતાં મૂર્તિઓની પૂજા કરવા વખતની ક્રિયાઓ કરવા માંડી. પૂજા પૂરી થયા પછી બંને બાઈઓએ મૂર્તિની પાસે જાણે કે કાંઈ માંગતા હોય તેમ હાથ ધર્યા. થોડા વખત માટે હાથ ધરેલા રાખ્યા અને એકદમ પ્રૌઢ બાઈએ જાણે કે કાંઈક અંતરીક્ષમાંથી પડતું હોય અને ગ્રહણ કર્યું હોય એવી ચેષ્ટા કરી. હાજર હતા તેમાંથી એક ગૃહસ્થે પ્યાલો ધર્યો અને તે સ્ત્રીના હાથમાં આપેલી વસ્તુ પ્યાલામાં પડી. મને રાતી સાકરનો એક ગાંગડો દેખાયો. તે સામાન્ય પ્રકારની સાકર હતી અને જરીક ભીની પણ હતી. તે ચમત્કારિક રીતે આવી, તે સિવાય કશું પણ નવાઈ જેવું તેમાં હતું જ નહીં. સમાધિસ્થ બાઈએ હાજર રહેલા લોકોને કીર્તન ગાવા કહ્યું. દરમ્યાનમાં એક બીજાં બાઈ બંને બાઈઓની પાછળ બેઠાં, કીર્તન ગવાતું હતું ત્યારે તે પણ સમાધિમાં ગયાં અને પડી ગયાં અને પા કલાક માટે તે દશામાં પડી રહ્યાં. કીર્તન પૂરું થઈ ગયા પછી કેટલાંક બીજાં કીર્તનો ગાવામાં આવ્યાં. નાની બાળાએ ફરી અદૃશ્ય સાધનોથી પૂજા કરવા માંડી અને ફરીથી હાથ ધર્યો. પ્રૌઢ બાઈએ ઝડપથી કાંઈક ગ્રહણ કર્યું અને તેમના હાથમાંથી પાંચ કે છ બદામો પ્યાલામાં પડી. ભજન ચાલુ હતું. ત્યારે જે મિત્રની સાથે હું આવ્યો હતો તેમને સમાધિ થઈ અને મારી પાસે જ તેઓ પડી ગયા. મેં તેમની નાડી તપાસી. તે મંદ હતી, પણ નિયમિત હતી. અને શ્વાસોચ્છવાસ ઊંઘતા માણસના જેવો હતો. તેમની મુખમુદ્રા શાંત હતી અને શરીર સ્તબ્ધ હતું. દશેક મિનિટ પછી શક્તિ આવી હોય તેમ બેઠા થઈ ગયા અને શરીર પર દુખાવા વિષે વાત કરવા લાગ્યા. ભજન પૂરું થઈ ગયા પછી તે બાઈઓને તેમના સમાધિ દરમ્યાનના અનુભવો વિશે મેં પૂછ્યું. તેમણે કહ્યું કે પુષ્કળ ધ્યાન કર્યા પછી તેઓ અંધકાર દેખે છે અને તે વખતે પડી જવાય છે. અને તેઓ જ્યારે અંધકારમાંથી પ્રકાશ દેખાય ત્યારે બેઠાં થાય છે. અને તે વખતે તેમના ગુરુની આકૃતિ તેમને દેખાય છે. ગુરુ તેમને પોતાની સાથે આવવા ફરમાવે છે. પછી ગુરુ તેમને કૃષ્ણ અને રામના ધામ પ્રત્યે લઈ જાય છે. અને તેમને વૈકુંઠ, ગૌલોક, કેલાસ અને વૃંદાવનની દિવ્યતાનાં દર્શન કરાવે છે. પછી મેં કહ્યું કે મેં જે જોયું તેને માટે - મને બહુ જ આશ્ચર્ય થાય છે. અને જો કે હું મારી જાતે તેમની સહૃદયતા અને પ્રામાણિકતા માટે ખાતરી આપું પણ કોઈ તટસ્થ નિરીક્ષકને બનાવની સત્યતા માટે સંશય રહે ખરો.

સમાધિસ્થિતિમાં કેટલાક માણસોને પ્રસાદ મળે છે. તે બનાવના સંજોગોની વૈજ્ઞાનિક તપાસ માટે મને વિનંતિ કરવામાં આવી. આનો હેતુ એ હતો કે આ ચમત્કારિક બનાવ માટે કોઈને શંકા ન રહે. મેં દર્શાવ્યું કે તે માટે પ્રસાદ જેમને મળે છે તે બાઈઓનાં કપડાં પહેલેથી ધ્યાનપૂર્વક તપાસવાં જોઈએ. અને જે સ્થળે મૂર્તિઓ છે તે સ્થળ અને પ્રસાદ મળે છે તે સ્થળ ધ્યાનપૂર્વક તપાસવાં જોઈએ. મેં વળી શરત મૂકી કે પ્રસાદ સીધો જ મારા હાથમાં આવવો જોઈએ, પણ વચ્ચે બીજો કોઈ માણસ ન હોવો જોઈએ. તેઓએ આનંદપૂર્વક મારી શરતોનો સ્વીકાર કર્યો. અને બીજે દિવસે તે પ્રમાણે ગોઠવણ કરવામાં આવી. સાંજને સમયે કેટલાક મિત્રો અને ત્રણ સન્નારીઓ કે જેમાંની બે આ શહેરની સંસ્થાઓમાં કામ કરતી ગ્રેજ્યુએટ સ્ત્રીઓ હતી, તેમના સહિત ઉપરોક્ત સ્થળે હું ગયો. શરૂઆતમાં મારી સાથેની સ્ત્રીઓએ જે બાઈઓ સમાધિમાં જવાની હતી, અને જેમને પ્રસાદ મળવાનો હતો, તેમનાં કપડાં અને અંદરનાં વસ્ત્રો ધ્યાનપૂર્વક તપાસ્યાં. જે સ્થળે મૂર્તિઓ ટીંગાવી હતી તે સ્થળ મેં ધ્યાનપૂર્વક તપાસ્યું. ચિત્રો પહેલાં તો લઈ લેવામાં આવ્યાં. તેની પાછળ કડિયા કામની બનેલી સપાટ દીવાલ હતી. ભીંતમાં કંઈ પણ બખોલ હોય તેવી નિશાની ન હતી તેમજ ચિત્રની ફેમમાં નાનું દ્વાર કે ફાટ જેવું ન હતું. જે ચિત્રમાંથી પ્રસાદ મળે છે તે કાચથી મઢેલું હતું અને ફેમ નવી તથા સારી સ્થિતિમાં હતી. બીજાં ચિત્રો નાનાં હતાં. તેની પણ મેં સંપૂર્ણ તપાસ કરી હતી. અને કંઈ પણ ઠગાઈ માટે રચના ન દેખાઈ. આગલા દિવસની જેમ ભજન શરૂ થયાં. અને તરત જ એક પછી એક બાઈઓ સમાધિમાં ગઈ. દશ મિનિટ પછી તેઓ જાગ્યાં અને અદૃશ્ય પૂજાપાથી પૂજા કરવી શરૂ કરી. પાંચ મિનિટ સુધી તેમના હાથ ખુલ્લા રાખ્યાં પછી પ્રૌઢ વયનાં બાઈએ ગ્રહણક્રિયા શરૂ કરી. હું તેમના હાથ સામે ધ્યાનપૂર્વક નજર રાખતો હતો. છેલ્લી ઘડી સુધી તે ખાલી હતી. ગ્રહણક્રિયા પછી તરત જ તેમના હાથની આંગળીઓ વચ્ચે રાતી સાકરનો ગાંગડો દેખવામાં આવ્યો. મેં તરત જ લેવા માટે હાથ લાંબો કર્યો. અને તેમણે સાકર મારા હાથમાં પડવા દીધી. નાની બાળાએ પૂજા શરૂ કરી અને કેટલીક મિનિટ પછી ખોખા સહિતની બે બદામોનો પ્રસાદ તેવી જ રીતે મળ્યો. તે આવ્યા પછી સીધો જ મારા હાથમાં લીધો. ભજન ચાલુ હતું. એક બીજી યુવતીને સમાધિ થઈ તે તરફ મારું લક્ષ ખેંચાયું. વળી, પાંચ છ વર્ષની ઉંમરના એક બાળકને પણ સમાધિદશા પ્રાપ્ત થતાં મેં જોઈ. પ્રાર્થના સમાપ્તિ પછી મેં તેમની દિનચર્યા, મનની સ્થિતિ, નિદ્રા અને કાર્ય વિષે પ્રશ્નો પૂછ્યા, જે ઉત્તરો મને મળ્યા તે સહૃદય હતા. અને મને લાગ્યું કે આ બાઈઓ છેતરપિંડી માટે શક્તિમાન નથી. કોઈ જ ચાલાકી અને યુક્તિ અને પ્રયુક્તિ પણ તેમનામાં મને લાગ્યાં નહીં. મેં જે મારી આંખે દેખ્યું તે વર્ણવું છું. અને હાજર રહેલા માણસોએ આપેલાં સ્પષ્ટીકરણો જણાવતો નથી. ખરી વાત એ છે કે સાકર અને બદામ કાંઈ પણ ન હતું ત્યાં ઓચિંતી

દેખવામાં આવી. હું પણ બનાવોની સમજૂતી માટે કાંઈ પણ પ્રયત્ન કરતો નથી. વળી, સિદ્ધાંત બાંધવા માટે મને વખત મળ્યો નથી. જેઓને રસ હોય તે તેમની મેળે પૂજામાં હાજર રહે. પૂજા દર શનિવારે અને એકાદશીની સાંજે શ્રી શંકરલાલ ઠાકરના મકાનમાં થાય છે. મને કહેવામાં આવ્યું છે કે આ બનાવો અસાધારણ ઘટના છે. તેથી જેઓ હાજર હશે તેઓ પણ મારાં અવલોકનો પોતાની આંખોએ જોઈ શકવા શક્તિમાન થશે.

મોરિસ ફીડમેન(સેવાગ્રામ, વર્ધા)

તા. ૧૦-૯-૪૦, અમદાવાદ

ઉપરના નિવેદનમાં લખેલા બંને બનાવો વખતે હું હાજર હતો અને બધું ધ્યાનપૂર્વક જોયું હતું. ઉપર લખેલું વર્ણન તદ્દન સત્ય છે.

પ્યારેકૃષ્ણ ઠુકરાળ

(અમૃતસર) ◆

રગે રગમાં રમે સ્વચ્છતા મંત્ર જ્યાં : પ્રમુખસ્વામી મહારાજ

Cleanliness flows in his blood: Pramukh Swami Maharaj

સન ૧૯૬૦ના દાયકાની વાત છે.

સારંગપુરમાં જળઝીલણી એકાદશીનો ઉત્સવ પૂરો થયા પછી બારશની બપોરનો વખત હતો.

બે વાગ્યાનો સમય થયો તોય બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સંસ્થાના પ્રમુખ તરીકે સૌનો આદર પામી ચૂકેલા પ્રમુખસ્વામીજી આરામ કરવા પધાર્યા નહીં, તેથી સેવક તેઓને શોધવા નીકળ્યા. કોઠાર, ભંડાર, સભામંડપ, સંતઆશ્રમ એમ બધે ધૂમી વળ્યા, પણ સ્વામીશ્રીનો પત્તો લાગ્યો નહીં. અંતે પછવાડે આવેલા કુંડ પાસે ગયા તો સેવક ધર્મજીવન સ્વામી દંગ જ રહી ગયા. અહીં સ્વામીશ્રી હરિભક્તોના સંડાસ સાફ કરી રહ્યા હતા!

વિગત એવી બનેલી કે જળઝીલણી એકાદશીનો સમયો કરી સૌ હરિભક્તો બારશના પારણાં કરીને વિદાય થઈ ચૂકેલા. સમૈયા પછી સ્વામીશ્રી સહજ સ્વભાવે મંદિરનું નિરીક્ષણ કરવા નીકળેલા. તેમાં હરિભક્તોના સંડાસ ગંદા જોતાં જ જાતે સાફ કરવા મંડી પડેલા.

ઢાળ જોઈને પાણી દોડવા માંડે તેમ ગંદકી જોઈને સ્વચ્છતાની સેવા કરવા માટે સ્વામીશ્રી ઝાલ્યા ન રહે. પાછળથી મોટી ઉંમરે પોતે ન કરી શકે તેમ હોય ત્યારે અન્યને સફાઈ કરવાની પ્રેરણા આપે, પણ સ્વચ્છતા લાવ્યે પાર કરે. આ તેઓશ્રીની સહજ સ્વાભાવિક પ્રકૃતિ છે.

યોગીજી મહારાજના અક્ષરવાસ પછી ગુરુપદે આરૂઢ થયેલા પ્રમુખસ્વામી મહારાજનો પ્રથમ જન્મજયંતી મહોત્સવ ભક્તોએ ખૂબ ધામધૂમથી ધર્મજમાં ઊજવવાનું આયોજન કર્યું હતું. પરંતુ એવી ધામધૂમને લક્ષ્યમાં લીધા સિવાય સ્વામીશ્રીએ પોતાના જન્મદિવસે (માગશર સુદ આઠમ, તા. ૨૬-૧૧-૧૯૭૧) જ વહેલી સવારે રસ્તા પર અહીં-તહીં પડેલી હરિભક્તોના ઍઠાં દાતણની ચીરીઓ ભેગી કરી ત્યારે સૌ નતમસ્તક બની ગયા હતા. જન્મજયંતી મહોત્સવની સવારે આમ ગંદકી સાફ કરવામાં પરોવાઈ જવું એ સ્વચ્છતાનો આગ્રહ રગેરગમાં રમતો હોય તો જ શક્ય બને.

જીવનભર તેમણે અનેક લોકોનાં જીવન અને વ્યવહારને તો સ્વચ્છ કર્યાં છે, પરંતુ સાથે સાથે ઘર, આંગણું અને જાહેર સ્થાનોને પણ સ્વચ્છ રાખવાની સતત પ્રેરણા આપી છે. તેમાંય મંદિર અને પૂજાસ્થળ તો અતિ સ્વચ્છ જોઈએ એવો તેમનો હંમેશાંનો આગ્રહ. સ્વામીશ્રી બી.એ.પી.એસ. સંસ્થાના કોઈપણ મંદિરમાં પધારે ત્યારે તેમની સર્વપ્રથમ નજર સ્વચ્છતા પર જ હોય. અને અસ્વચ્છતા નજરે ચઢે તો ગણતરીની ક્ષણોમાં જ એ ગંદકી દૂર કરવા માટે તેઓ તલપાપડ થઈ ઊઠે. સામાન્ય ગંદકી પણ તેઓ ચલાવી ન લે.

તા. ૧૮-૧૨-૨૦૦૪ના રોજ સ્વામીશ્રી એક મંદિર પરિસરનું નિરીક્ષણ કરવા પધારેલા. તેમાં તેઓની નજર એક ગમનપથ પર પડી. ત્યાં પાથરેલી લાદી પર સિમેન્ટના થર બાઝેલા હતા અને ક્યારેય સાફ ન કર્યું હોય એટલું ગંદુ લાગતું હતું. સ્વામીશ્રી બે ઘડી ત્યાં ઊભા રહી ગયા. પછી પોતાની સાથે વિચરણમાં જોડાયેલા ૨૫ સાધકો(સાધુ થનારા યુવાનો)ને કહે : ‘બધા સાથે ફરો છો તો અત્યારે ને અત્યારે આ બધું સાફ કરી નાંખો. એક પણ ડાઘો રહેવો ન જોઈએ. હું જમ્યા પછી અહીં જોવા આવીશ.’

આમ, સૌને સ્વચ્છતા અભિયાનમાં જોડી દીધા. બપોરે સ્વયં નિરીક્ષણ કરવા પધાર્યા. કામ જોઈ સંતોષ વ્યક્ત કર્યો પણ ઉમેર્યું : ‘સારું કર્યું છે છતાં હજી ધાર વ્યવસ્થિત સાફ કરો.’

પછી બોલ્યા : ‘આટલું કર્યા બાદ ઠાકોરજીની પછવાડે પણ એક સંડાસ-બાથરૂમનો બ્લોક છે. ત્યાં પણ જોઈ આવજો. ત્યાં પણ સાફસૂકી કરવાની છે. દવા છાંટવાની છે. બહુ જ ગંધાય છે. ઠાકોરજી આગળ દુર્ગંધ આવે એવું છે. માટે ત્યાં ખટકો રાખીને સાફ કરજો.’

આટલી સૂચના આપ્યા બાદ સ્વામીશ્રીએ સ્વચ્છતા અભિયાન વિસ્તાર્યું અને કહ્યું : ‘આ સંડાસ-બાથરૂમથી માંડીને આખા સંકુલમાં જ્યાં-જ્યાં સંડાસ-બાથરૂમ છે એ બધાં જ સાફ કરી નાંખજો.’

સાધકોએ આ આજ્ઞા હોંશે હોંશે પાળીને ગણતરીના કલાકોમાં સમગ્ર સંકુલને ચોખ્ખું ચણાક અને સ્વચ્છ-સુઘડ કરી નાંખ્યું. તે જોઈ સ્વામીશ્રીએ મંદિર વ્યવસ્થાપકોને કહ્યું : ‘આ બધા સાધકોએ તો આજે સાફસૂકી કરી, પણ કાયમ માટે આ કરવાનું છે. આવું ને આવું રાખવાની જવાબદારી તમારી છે. માટે આ બાબતમાં ખટકો રાખજો.’

સ્વચ્છતા બાબતે સ્વામીશ્રી લેશ પણ વિલંબ ચલાવતા નથી. તા. ૨૦-૧૧-૨૦૦૮ના રોજ એક મિટિંગમાં તેઓશ્રી બોલેલા : ‘બે માણસો એવા જોઈએ કે જે સાફ કર્યા જ કરે. ઉતારામાં એક વ્યક્તિ ઊતરે અને તરત જ સાફ થઈ જવા જોઈએ. વ્યવસ્થાપકે રોજ જોતાં રહેવું જોઈએ. જાજરૂ-બાથરૂમ પણ નિયમિત સાફ કરવાં જોઈએ.’

એકવાર એક મંદિરમાં સ્વામીશ્રી લિફ્ટ દ્વારા નીચે પધારી રહ્યા હતા. લિફ્ટની દેખભાળ રાખનાર વ્યક્તિ પણ તેઓની સાથે હતા. તેઓને નિર્દેશીને સેવક સંતે સ્વામીશ્રીને કહ્યું : ‘બાપા ! આ લિફ્ટના માલિક.’

‘માલિક છે તો આ બધા ડાઘાને જો.’ એક કહેતાં સ્વામીશ્રીએ નીચે ઊતરી રહેલી લિફ્ટમાં વચ્ચે વચ્ચે આવતી દીવાલો પરના ડાઘા બતાવ્યા.

તે જોઈ એ જવાબદાર વ્યક્તિએ કહ્યું : ‘એને રંગ મરાવી દઈશું. સત્સંગી ન હોય એવા લોકો મળવા આવે ત્યારે દીવાલો પર પાનની પિયકારીઓ મારે છે.’

આ સાંભળી સ્વામીશ્રી બોલ્યા : ‘એ લોકોને જેમ બગાડવાની ટેવ છે, એવી સ્વચ્છ રાખવાની ટેવ આપણે પણ પાડવી.’ અહીં સ્વામીશ્રીએ વજૂદવાળી વાત કહી દીધી. ઘણીવાર કેટલાક આમ કહી છટકબારી શોધી લે છે કે, ‘આપણે એકલા સ્વચ્છતા રાખીએ તેથી શું ?’ પણ આપણે ભૂલી જઈએ છીએ કે ‘સ્વચ્છતા’ શબ્દની શરૂઆત જ ‘સ્વ’થી થાય છે. સ્વચ્છતાનો આગ્રહ આપણે રાખવો ઘટે, કોઈ રાખે કે ન રાખે તેથી શું ?

એકવાર એક ગામમાં સભામાં આશીર્વાદ આપી સ્વામીશ્રી પોતાના ઉતારા તરફ જઈ રહ્યા હતા. ત્યાં રસ્તામાં તેઓશ્રીએ જોયું તો રસોડાની બહાર ઉટકાતાં વાસણોનું પાણી રેલાતું હતું. તે જોઈ તરત ટકોર કરતાં કહ્યું : ‘આ રીતે પાણી બહાર રેલાય, પછી મચ્છર થાય અને રોગ થાય. માટે સ્વચ્છતા પહેલેથી રાખવી. આયોજન પહેલેથી કરવું, જેથી આ પાણી ગટર ભેગું વહી જાય. ગટરમાં પાણી જાય એવી વ્યવસ્થા કરાવી દેજો, નહીં તો ગંદકી ને ગંદકી જ થયે રાખશે.’

એકવાર એક મંદિરમાં ઉતારા વિભાગ સંભાળતા કાર્યકરોને સ્વચ્છતા-સંહિતા સંભળાવતાં સ્વામીશ્રીએ કહેલું : ‘વ્યવસ્થિત રીતે બધી જ રૂમો સાફ થઈ જવી જોઈએ. રોજ જોઈ લેવું જોઈએ કે ચાદરો સરખી છે કે નહીં ? ચાદરને નિયમિત રીતે ધોઈ નાંખવી જોઈએ. રૂમ પણ ખૂણે-ખાંચરેથી સાફ કરવી જોઈએ. મગજમાં આ વાત કાયમ રાખવી. જાતે ઊભા રહીને કામ કરવું. આળસુની જેમ પડી ન રહેવું.’

સ્વામીશ્રી સંસ્થાના કોઈ પણ સંકુલમાં પધારે ત્યારે ત્યાંના રોકાણ દરમ્યાન એકવાર તો એ સંકુલનું નિરીક્ષણ કરવા અવશ્ય નીકળે. તે સમયે તેઓની ઝીણી નજરમાંથી એકેય ખૂણો ચસકી ન શકે. સાથે રહેલા વ્યવસ્થાપકોને સંકુલની સ્વચ્છતા સંબંધી સૂચનો મળતાં જ જાય. આજે દેશ-વિદેશનાં બી.એ.પી.એસ. મંદિરો તથા ગાંધીનગર અને દિલ્હીના અક્ષરધામની બેનમૂન સ્વચ્છતા સૌની આંખે ઊડીને વળગે છે તેના મૂળમાં સ્વયં સ્વામીશ્રીનો સ્વચ્છતા અંગેનો આ આગ્રહ રહેલો છે. હિંદુ મંદિરો પર લાગેલું અસ્વચ્છતાનું કલંક સ્વામીશ્રીએ ધોયું છે અને વિદેશીઓના મનમાંય પહેલાં અને વહેલાં વસી જાય એવાં મંદિરો-સંકુલો તૈયાર કર્યા છે.

તા. ૧૧-૧૨-૨૦૦૧ના રોજ એક મંદિરનું નિરીક્ષણ કરવા નીકળેલા સ્વામીશ્રીની નજર કચરાપેટી પર પડી. તે જોઈ સ્વામીશ્રીએ સંચાલકોને કહેલું : ‘આવી કચરાપેટી થોડે થોડે અંતરે બધે મૂકી દેવી. સ્વચ્છતા બહુ અગત્યની છે. મંદિરની અને કેમ્પસની સ્વચ્છતા એવી રાખવી કે બધાને ગમે. રોજ એકવાર વળાઈ જવું જોઈએ. ઘુમ્મટ-પ્રદક્ષિણામાં કચરા-પોતાં થઈ જાય. જરૂર પડે તો માણસો રાખવા. સેવાભાવી હરિભક્તો પાસે પણ મહિને એકાદવાર બંધું સાફ કરાવવું. કચરાનું તો જેવો પડ્યો તેવો લઈ લેવો... જેવો પડ્યો તેવો લઈ લેવો, એવું રાખવું...’

સ્વચ્છતા અંગે સ્વામીશ્રીનો પરિઘ બહુ મોટો છે. માત્ર મંદિરનું ગર્ભગૃહ કે ઘુમ્મટ-પ્રદક્ષિણા નહીં, પરંતુ મંદિરના બાગ-બગીચા, બારી-બારણાં, છત-દીવાલ, સંડાસ-બાથરૂમ સહિત બધું જ સ્વચ્છ રાખવાના તે હિમાયતી. તેઓ સમજે છે કે ઘરની સ્વચ્છતા ફળિયાની સ્વચ્છતા વિના શોભતી નથી. તેથી તેઓ આમ કહેતા રહ્યા છે : ‘સ્વચ્છતા બરાબર રાખવી. ખાસ કરીને સંડાસ-બાથરૂમ સ્વચ્છ રાખવાં. સંડાસ-બાથરૂમ જેટલાં સાફ એટલી તમારી કિંમત થાય... મંદિર તો સાફ રહે, પણ આજુબાજુનું બધું જ સાફ કરવાનું. લોન પણ સાફ રહે એમ કરવાનું... મંદિરના કમ્પાઉન્ડમાં એક કાગળ પણ એમ ને એમ પડેલું ન હોવું જોઈએ...’

સાર્વજનિક સ્થાન સમાં મંદિરોની સાથે સાથે વ્યક્તિગત વપરાશનાં સ્થાનોની સ્વચ્છતાનો આગ્રહ પણ સ્વામીશ્રીને પૂરેપૂરો. તેઓ ઘણીવાર વ્યંગમાં કહેતા રહ્યા છે કે, ‘કેટલાક કંદોઈની દુકાનમાં આગળ શો કેસમાં સારી સારી મીઠાઈઓ ગોઠવી હોય, પણ પાછળનો ગંદવાડો જુએ તો ખાવાનું મન ન થાય.’ તેમ પરિસરની સ્વચ્છતાની સાથે સાથે રૂમો અને તેમાં રહેલી તમામ સામગ્રી પણ સ્વચ્છ રહેવી જોઈએ એની સ્વામીશ્રીને ખટક.

એકવાર તા. ૨૯-૮-૨૦૦૮ના રોજ આ અંગે ગાંઠે બાંધી રાખવા જેવી વાત કરતાં સ્વામીશ્રીએ કહેલું કે ‘ટેબલ એવું હોવું જોઈએ કે એકપણ કાગળ ત્યાં રહેવો ન જોઈએ. જે દિવસે કાગળ આવ્યો એનો તરત જ નિકાલ થઈ જવો જોઈએ અને સાચવવા જેવું હોય તો એને વ્યવસ્થિત ફાઈલમાં મૂકીને ગોઠવી દેવો જોઈએ. બે માણસ મળવા આવે તો મળવાનું મન થાય એવી રૂમ હોવી જોઈએ. ગોબરું ગોબરું હોય તો મગજ પણ એવું રહે. એટલે સ્વચ્છતા ખાસ રાખવી અને કામનો તરત નિકાલ લાવતા શીખવું. ટેબલ ઉપર કાગળોનો ઢગલો રાખ્યો હોય પછી શોધવો હોય તો શોધતાં કલાક થાય અને સમય બગડે. એટલે આ બાબતમાં ખાસ ખટકો રાખવો.’

વ્યક્તિગત કે જાહેર ઉપયોગનાં સ્થાનોની સાથે સાથે કપડાં વગેરેની સ્વચ્છતા માટે પણ સ્વામીશ્રીની અભિરુચિ અને આગ્રહ ખરાં.

એક મંદિરમાં ઉતારા તરફ જતાં પહેલાં રસોડામાં સ્વામીશ્રીએ નજર કરી. રસોડાની ચોખ્ખાઈ જોઈને તેઓ રાજી થયા. આમંત્રિત અતિથિઓના રસોડામાં મૂકવામાં આવેલા ટેબલ-ખુરશી પાસે એક યુવક ઊભો હતો. તેને જોઈને સ્વામીશ્રીએ પૂછ્યું : ‘તું અહીં શું કરે છે?’

‘પીરસવાની સેવા.’

‘અલ્યા ! તારાં કપડાં તો જો.’ તે યુવકનાં કપડાં મેલાં-ધેલાં હતાં. તેથી તરત જ વ્યવસ્થાપકોને ટકોર કરતાં સ્વામીશ્રીએ કહ્યું : ‘રોજ કપડાં સ્વચ્છ પહેરાવવાનાં.’ એમ કહીને વ્યવસ્થાપકને કહ્યું, ‘આની પાસે સ્વચ્છ કપડાં ન હોય તો નવાં આપી દેવાનાં. રોજ આ કપડાં ધોવાય એ રીતે ખટકો રાખવો. ચોખ્ખાઈ પહેલી હોવી જોઈએ. કપડાં આવાં મેલાં-ધેલાં રહે તો કેવું કહેવાય?’

આમ, નાનામાં નાની વ્યક્તિ કે વિગતથી લઈને ઠેઠ સુધી સ્વામીશ્રીને બધું જ સ્વચ્છ રહેવું જોઈએ તેવું તાન. વિચરણ દરમ્યાન હરિભક્તોના ઘેર રોકાવાનું થતું. તે વખતે પણ હરિભક્તોના ઘરની સ્વચ્છતા સંપૂર્ણ જળવાય એ રીતે જ પોતે રહે ને બીજાને પણ એમ જ રહેવાની શીખ આપે.

સ્વામીશ્રી સાથે વર્ષો સુધી સેવામાં રહેલા પૂજ્ય દેવચરણ સ્વામીએ એક પ્રસંગ નોંધ્યો છે કે : ‘એક વખત અમે આણંદમાં હતા. જ્યાં ઉતારો રખાયો તે ઘર નવું જ બંધાયું હતું. અહીં શૌચાલય અને બાથરૂમમાં નવી મોઝેઈક ટાઈલ્સ ચોંટાડી હતી. તેથી ટાઈલ્સ પર હજુ સિમેન્ટ અને રંગનાં ડાઘા-ડૂઘી એમ ને એમ હતાં. સ્વામીશ્રી સ્નાન માટે ગયા ત્યારે તેમણે જાતે જ ટાઈલ્સ પર પાણી નાંખીને ટાઈલ્સની સાફસૂફી કરી નાંખી. મેં આ જોયું એટલે તરત તેમને રોક્યા અને કહ્યું : ‘સ્વામી ! આપ રહેવા ઘો. અમે કરી નાંખીશું. અહીં દોઢ દિવસ રહેવું ને ક્યાં આટલી બધી મહેનત કરવી!’

ત્યારે સ્વામીશ્રી બોલ્યા : ‘એમ ન ચાલે. કરવું જ જોઈએ. આપણે જ્યાં રહ્યા હોઈએ ત્યાંથી જઈએ ત્યારે એને સાફ કરીને મકાન આપવું જોઈએ. એણે જેવું આપણને આપ્યું હોય એનાથી વધુ સારું સાફ કરીને, ધોઈને આપવું જોઈએ. આપણે સાફ કરીએ તો આપણી સેવા થઈ જાય ને !’

સ્વચ્છતા અંગે સ્વામીશ્રીનો આગ્રહ અને આશય, બંને અનોખાં! એકવાર સ્વામીશ્રી વિદ્યાનગરમાં આવેલા સંસ્થા સંચાલિત છાત્રાલયમાં વિદ્યાર્થીઓના આવાસનું નિરીક્ષણ કરવા માટે પધારેલા. એક રૂમમાં ગયા. રૂમ સ્વચ્છ હતી, પરંતુ યુવામાનસના પારખુ સ્વામીશ્રી સીધા ગેલેરીમાં પહોંચ્યા. યુવકોએ સ્વામીશ્રી આવવાના છે તે જાણી રૂમ સાફ કરી દીધેલી,

પણ ગેલેરીમાં સ્વામીશ્રી આવશે તેવી તો તેઓને કલ્પના જ નહીં. તેથી ત્યાં બધું જેમતેમ પડેલું. સાબુના થોડા-ઘણા ટુકડાની સાથે એક ભીનું મસોતું પણ હતું. તે જોઈ સ્વામીશ્રીએ તે રૂમમાં રહેતા વિદ્યાર્થીઓને બોલાવ્યા અને પેલું મસોતું જાતે જ ઊંચકીને કહ્યું : ‘જુઓ આ મચ્છર ! આવું રાખો પછી રોગને આમંત્રણ આપવા જવું પડે ? આ સાબુ, આ શીશી બધું વ્યવસ્થિત મૂકવું. અત્યારથી એવી ટેવ પાડવી. સ્વચ્છતા માટે ટાપટીપ કરવી.’ એમ સ્વામીશ્રીએ સ્વચ્છતા સંબંધી હિતોપદેશ આપ્યો.

અહીંથી સ્વામીશ્રી બીજી રૂમમાં આવ્યા. આ રૂમમાં રહેતા યુવકોને ગેલેરી સાફ કરવાનો સમય મળી ગયો હતો, પરંતુ સ્વામીશ્રીએ રૂમ તથા ગેલેરી ન જોતાં કહ્યું : ‘તમારા કબાટ ખોલો તો ?’ કબાટ ખૂલવાની સાથે જ પોલ પણ ખુલ્લી પડી ગઈ. યુવકોએ રૂમ-ગેલેરીના બધા ડૂચા કબાટમાં ભરી દીધેલા. તેઓને કલ્પના સુદ્ધાં નહીં કે સ્વામીશ્રી કબાટ ખોલાવશે ! અહીં પણ સ્વામીશ્રીએ અંદર-બહાર બધું સ્વચ્છ રાખવાનાં હિતવચનો કહ્યાં.

જ્યારે સ્વામીશ્રી ત્રીજી રૂમમાં પહોંચ્યા ત્યારે અહીં રહેતા યુવકોએ અગાઉ થયેલી રૂમોની મુલાકાતના અનુભવ મુજબ રૂમ-ગેલેરી-કબાટ સહિત બધું સ્વચ્છ-સુઘડ કરી દીધેલું. સ્વામીશ્રી રાજી થયા, પણ રૂમમાંથી નીકળતાં પહેલાં પંખાના રેગ્યુલેટર પર જામેલી ધૂળ બતાવતાં યુવકોને કહ્યું : ‘નિયમિત સાફસૂફી થતી હોય તો આ ન રહે. માટે રોજ સ્વચ્છતા રાખવી. કોઈને બતાવવા નહીં, પણ આપણા માટે આ કરવું. રૂમ સ્વચ્છ હોય તો ભણવામાંય સારું રહે.’ સૌ છાત્રોને સ્વચ્છતાના પાઠ શિખવાડી સ્વામીશ્રી નીકળ્યા.

મહાભારતના ભીષ્મપર્વ(૬૨/૩૪)માં લખ્યું છે કે : ‘જ્યાં કૃષ્ણ છે ત્યાં ધર્મ છે અને જ્યાં ધર્મ છે ત્યાં જય છે.’

આ જ મિજાજમાં આધુનિક સંદર્ભમાં આમ કહી શકાય એમ છે કે, ‘જ્યાં પ્રમુખસ્વામી છે ત્યાં સ્વચ્છતા છે અને જ્યાં સ્વચ્છતા છે ત્યાં પ્રભુતા છે.’ તો ચાલો, આપણે પણ આપણા ઘરમાં, જીવનમાં અને કાર્યસ્થળમાં સ્વચ્છતા રાખીને પ્રભુતા અને પ્રમુખતાનો એક સાથે અનુભવ કરીએ !

સાધુ આદર્શજીવનદાસ ◆